(2Б) (Р)
937
Н

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1317/1974

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 937

६
५।१

॥ बन्देमातरम् ॥

शहीदों की यादगारी

अतरसुइया प्रभातफेरी प्रयाग।

(दूसरा भाग)

भगतसिंह

प्रकाशक—

सत्यनरायण लाल धौरिया

एलाहाबाद

द्वितीयवार २०००

सन् १९३१

मूल्य –)

891.431
Sh 13 Sh

[IM]PERIAL RECORD [D]EPARTMENT
RECEIVED.
8 - AUG. 1931

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 937
Date 27.12.71

वन्देमातरम् ।

छीन सकती है नहीं सरकार बन्दे मातरम् ।
हम ग़रीबों के गले का हार बन्देमातरम् ॥
सर चढ़ों के सर में चक्कर उस समय आता जरूर ।
कान में पहुँचा जहां झनकार बन्देमातरम् ॥
जेल में चक्की घसीटे भूख से हो मर रहा ।
उस समय भी बक रहा बेज़ार बन्देमातरम् ॥
मौत के मुंह में खड़ा हो कह रहा जल्लाद से ।
भोंक दे सीने में वह तलवार बन्देमातरम् ॥
डाक्टरों ने नब्ज़ देखी सर हिला कर कह दिया ।
हो गया इसको तो यह आज़ार बन्देमातरम् ॥
ईद होली दशहरा शुबरात से भी सौ गुना ।
है हमारा लाड़ला तेवहार बन्देमातरम् ॥
ज़ालिमों का ज़ुल्म भी काफ़ूर सा उड़ जायगा ।
जब फैसला होगा सरे दरबार बन्देमातरम् ॥

———

शेर हज़ारों नर निकले ।

मायूस न हो ऐ लोग मिसाले शेर हजारों नर निकले ।
क्या फिक्र अगर इस आलम से आज़ाद चन्द्रशेखर निकले ॥

सरदार भगतसिंह हुये खतम, फांसी से निकाला गया था दम ।
बादहू उठे थे अब्रे गम, आलम से नेक बसरनिकले ॥मायूस०॥

बदरङ्ग थे चेहरे यारों के रो रहे थे दिल बेचारों के ।
अबतर थे हाल बाज़ारों के मातम के साथ लश्कर निकले ॥मायू०॥

थीं जहाज हवाई ज्यादातर आसमान पर करतीं चक्कर ।
फौज़ों के रहे पहरे दर दर जिनके थे हर एक अफसर निकले ॥मायू०

हरताल थो मुल्कों में भारी बन्द हुईं दुकानें थी सारी ।
गमकी हरसू थी अँधियारी अफसर थे शख्त जिगर निकले ॥मायू०

था जिन्होंने खासा हाथ लिया फांसी के लिये था हुक्म दिया ।
नहीं भगतसिंह ने आह किया मरने को थे बे खतर निकले ॥मायू०॥

यह कहा था सच है बतलाऊँ कि सज़ा न फांसी की पाऊँ ।
गोलो से मैं मारा जाऊँ अलफ़ाज नहीं दीगर निकले ॥मायूस०॥

आज़ादों के सरदार रहे भारत पर सदा निसार रहे ।
सर किये तहे तलवार रहे इस क़दर थे हिम्मतवर निकले ॥मायूस०॥

क़ब्ल मौत कितने आये थे अश्कों की झड़ी लगाये थे ।
उनसे मिलने नहिं पाये थे वापस होकर मुख्तर निकले ॥मायूस०॥

तारीख रही तेइस है जेहन था मार्च सन् एकतिस सहो सुखन ।
सरदार भगतसिंह छोड़ वतन इस दुनिये से बाहर निकले ॥मायू०॥

सनसनी मुल्क में थी छाई नहिँ लास किसी ने भी पाई ।
दरिया पे गई थी जलवाई गमगीं थे हर एक लीडर निकले ॥मायू०॥

भगवन् बच्चू का रङ्ग रहे, जोजू से शायर तंग रहे।
महफिल में बजता चंग रहे हर लफ़्ज गिरले गौहर निकले ॥माथू०॥

मोतीलाल जहां से सिधारे।

भारत माता की आंखों के तारे मोतीलाल जहां से सिधारे।
बेगि खबर अब लीजे मुरारी, हांथ तुम्हारे है पतवारी ॥
किस्ती भारत का कर दो किनारे मोतीलाल जहां से सिधारे।
तुमसा कोई बलकारी नहीं है, चक्र सुदर्शन धारी नहीं है ॥
कहां बैठे हो तुम मन मारे मोतीलाल जहां से सिधारे।
जब कि कंस ने जुल्म किया था तुम्हीं ने तब औतार लिया था ॥
तुम हो भक्तन के प्राण अधारे मोतीलाल जहां से सिधारे।
तुमहीं ने था दुष्टों को सँहारा भार जो था भक्तों का उतारा ॥
बोझा भारत का कौन उतारे मोतीलाल जहां से सिधारे ॥
रात और दिन धर्म है रोता पाप तो निस दिन है खुश होता।
दशा बिगड़ी को कौन सुधारे मोतीलाल जहां से सिधारे ॥
हिन्द को आकर जल्द सँभालो डूब रहा है नइया बचालो।
आओ जल्दी नन्द जी के प्यारे मोतीलाल जहां से सिधारे।
ननकू को तो विद्या बल दीजे भक्त जनन का दुःख हर लीजे ॥
क्यों बैठे हो सबको विसारे मोतीलाल जहां से सिधारे।

काली कमली के ओढ़नवाले ।

किश्ती भारत की पार लगा दो,
काली कमली के ओढ़न वाले ।

आलम से मोतीलाल सिधारे,
रोते हिन्द के लोग बिचारे ।

प्याला ढारस कासब को पिला दो,
काली कमली के ओढ़न वाले ॥

जैसे बसुदेव जी का कष्ट निवारा,
जन्म जेहल में ले दुष्टों को मारा ।

वैसे भारत का बन्द छुड़ा दो
काली कमली के ओढ़न वाले ॥

बल्ली रहम की है आपी के कर में,
चक्कर है खाती नैया भंवर में ।

उस पर रहमत का मेंह बरसा दो,
काली कमली के ओढ़न वाले ॥

भक्तों के कष्ट थे तुमने हटाये,
मित्र सुदामा को थे अपनाये ।

वही प्रेम का रस अब चखा दो,
काली कमली के ओढ़नवाले ॥

खुश्क हो रहे फूल चमन में,
रोती बुलबुलें हैं गुलशन में ।

उनको बन्सी की टेर सुना दो,
काली कमली के ओढ़नवाले ॥

गौवें तुम्हारी हाय मुरारी,
बिला खता सब जाती हैं मारी ।
ऐसे कष्ट से नाथ बचा दो,
काली कमली के ओढ़नवाले ॥
बिनती कबूल हो ननकू की सारी,
बच्चू याद में रहते तुम्हारी ।
उनको अब तो दरस दिखला दो,
काली कमली के ओढ़नवाले ॥

शहीदों का संदेस

दिन खून का हमारे प्यारो न भूल जाना,
खुशियों में अपनी हम पर आँसू बहाते जाना ।
सैयाद ने हमारे चुन २ के फूल तोड़े,
बीरान इस चमन में अब गुल खिलाते जाना ॥
गोली को खा के सोये जलयान बाग में हम,
सूनी पड़ी क़बर पर दीपक जलाते जाना ॥
हिन्दू और मुस्लिमों की होती है आज होली,
बहते हमारे रङ्ग में दामन भिगोते जाना ॥
कुछ कैद में पड़े हैं हम क़ब्र में पड़े हैं,
दो बूंद आँसू इन पर 'प्रेमी' बहाते जाना ॥

भगतसिंह ।

फांसी का भूला भूल गया मर्दाना भगतसिंह ।
दुनियां को सबक दे गया मस्ताना भगतसिंह ॥
राजगुरु से शिक्षा लो दुनिया के नवयुवको ।
सुखदेव को पूछो कहां मस्ताना भगतसिंह ॥ फांसी ॥
रोशन कहां अशफाक और लहरी कहां बिसमिल ।
आजाद से था सच्चा दोस्ताना भगतसिंह ॥ फांसी ॥
स्वागत को वहां देवगण मैं इन्द्र के होंगे ।
परियां भी गाती होंगी यह तराना भगतसिंह ॥ फांसी ॥
दुनियां को हरएक चीज को हम भूल क्यूं न जायें ।
भूले न मगर दिल से मुस्कराना भगतसिंह ॥ फांसी ॥
भारत के पत्ते पत्ते में सोने से लिखेगा ।
राजगुरु सुखदेव और मस्ताना भगतसिंह ॥ फांसी ॥
ऐ हिन्दियों सुनलो जरा हिम्मत करो दिल में ।
बनना पड़ेगा सब को अब दीवाना भगतसिंह ॥ फांसी ॥

मुद्रक—प० रामभरोस मालवीय, अभ्युदय प्रेस, प्रयाग ।
प्रकाशक—सत्यनरायण लाल धोरिया अतरसुइया, इलाहाबाद ।